जुलाई–सितम्बर 2021

अंक : 5

शालिनी

जनचेतना, प्रेम एवं बन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण - त्रैमासिकी पत्रिका

VISIT…

शालिनी

जनचेतना, प्रेम एवं बन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

वर्षः2 अंकः5 माह जुलाई-सितम्बर2021

संरक्षकः

अमित साहू

★

प्रधान सम्पादकः

कन्हैया लाल

★

कार्यकारी सम्पादकः

अमित साहू

★

मार्गदर्शक
एवं
सलाहकार मण्डलः

अजय सिंह
डॉ. राजेश कुमार
विजय गौतम
रोशन सिंह

★★

प्रिय पाठकों आप सभी अपने सुझाव, प्रतिक्रिया, शिकायत अथवा विज्ञापन हमें इस ई-मेल आईडी या व्हाट्सएप्प नम्बर पर भेंज सकते हैंः-

ई-मेलः- कन्हैया लाल-
kanhaiyalal221104@gmail.com या
अमित साहू-
amitrazz2111@gmail.com

व्हाट्सएप्प नम्बरः-
9369926630
या
7844831219

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। विवाद होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगें।

पत्रिका पूर्णतया अव्यवसायिक और संपादकीय मंडल अवैतनिक है।

पत्रिका निःशुल्क है। आप स्वेच्छा से निम्नलिखित खाते में सहयोग राशि का भुगतान कर सकते हैं।
Kanhaiya lal
A/c- 34033861834
IFSC- SBIN0016347
STATE BANK OF INDIA

सम्पादकीय कार्यालय

ग्राम- सुंगुलपुर, पोस्ट- चौबेपुर,
जिला वाराणसी-221104 उ.प्र.
मो0: **9369926630**

इस अंक में.....

सम्पादकीय....		2
अहिल्याबाई होल्कर	–अमित साहू	3.
उम्मीद पर दुनिया कायम	–प्रियंका पेड़ीवाल	5.
घुँघट	–शुभम पांडेय	6.
ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियां	–सलिल सरोज	7.
ये क्या है	–अजय प्रसाद	8.
यादों के सहारें	–प्रियंका रानी	9.
जुबान तेज या तलवार	–सुधीर श्रीवास्तव	11.
धरती पर हम	–मधुकर वनमाली	12.
मूर्ति	–आराधना प्रियदशर्नी	12.
तंबाकू से जीवन विभीषिका	–मंजूरी डेका	13.
मुस्कान	–ब्रह्मकुमारी मधुमिता	15.
यादें	–शरद नारायण	16.
हौसला रख ले मनुज मन	–अनामिका लेखिका	17.
बरसात	–उदय किशोर शाह	17.
मुश्किल घड़ी में हारना नहीं	–लाल देवेन्द्र	18.
दुर्घटना में घायल की सहायता	–दिवाकर तिवारी	18.
आशियाना	–रीता तिवारी'रीत'	19.
खुद की तलाश	–रेखा शाह अरबी	19.
प्रकृति से छेड़ छाड़	–श्यामसुन्दर श्रीवास्तव	20.
जीवन खुशी के रंग	–महेन्द्र वर्मा	20.
हे! म्जदुर तुम्हें नमन	–सतीश उपाध्याय	21.
गज़ल	–दीपक महापात्रे	21.
हाय! रे कोरोना	–अंकुर सिंह	22.
मन्दिर मस्जिद नहीं अस्पताल बनायें	–डा० विनय	22.

नई सोच और दिशा के साथ शिक्षा की ओर अग्रसर

एम. आर. कोचिंग क्लासेस

M.R. Coaching Classes

Reg. No. 734/16

UP और CBSE बोर्ड

कक्षा 1 से 10 तक

मैदान में हारा हुआ इंसान फिर से जीत सकता है लेकिन मन से हारा हुआ कभी नहीं जीत सकता

कलम व किताब की ताकत दुनिया की हर ताकत से बड़ी है। एक रोटी कम खाएं पर बच्चों को जरूर पढ़ाएं

विशेष-

- कमजोर बच्चों के लिए एक्स्ट्रा क्लास।
- एक बच्चों पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान।
- साप्ताहिक टेस्ट।
- हर रविवार एक्स्ट्रा क्लास।
- न्यूनतम फिस में बेहतर शिक्षा।

डायरेक्टर- कन्हैया लाल

सहयोगी- अमित साहू, रोशन सिंह चौहान

पता- गौरा रोड, सुंगुलपुर, तिवारीपुर, चौबेपुर, वाराणसी

मो.: 9369926630, 8112731647

सम्पादकीय . . . .

वर्तमान समय में चल रहे कोरोना महामारी के कारण पिछले कई महिनों में हमारा देश बदल गया है। जहां इस संक्रमित बिमारी की चपेट में लाखों लोग आये और हजारों जाने गवांई। इस कोरोना का कहर पूरे देश पर टूट पड़ा है। देश में बढ़ते संक्रमण के साथ–साथ बेरोजगारी, भूखमरी, आर्थिकतंगी भी बढ़ी है। इस कोरोना महामारी ने मानव को बहुत कुछ सिखाया है तो बहुत कुछ छीन भी लिया है।

जैसा कि हमारे देश में ऑक्सीजन कि समस्या है हमें यह बता रही है कि प्रकृति के साथ किया गया छेड़–छाड़ मानव जीवन के लिए घातक है। सिखने वाली बात यह कि हमें प्रत्येक परिस्थिति में प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करके रहना चाहिए अन्यथा सामंजस्य स्थापित न होने पर ये मानव जीवन के लिए घातक साबित हो सकती है। इस कोरोना काल में ज्यादातर लोगों को जीवन यापन करने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, यहां तक कि लोग खाने तक के लिए परेशान हैं और इसी बीच कुछ लोग जमकर फायदा भी उठा रहें है। दैनिक जीवन की वस्तुओं के दाम एक का चार ले रहें हैं और दवाओं के दाम में भी बढ़ोत्तरी हो गई। इस मुश्किल घड़ी में अपने भी साथ छोड़ दे रहें है। इससे साफ–साफ नजर आता है कि मानवता ने अपना दम तोड़ दिया है और मानवता शर्मसार हो गई है।

इस कठिन परिस्थिति में हमें अपनों तथा आसपास के लोगों का यथासम्भव आर्थिक, मानसिक, शारीरिक रूप से मदद करने की आवश्यकता है। कुछ लोग बेबस निगाहों से मदद की उम्मीद लगायें हुए है इस बुरे दौर में इनकी मदद करने की जरूरत है।

शालिनी जनचेतना, प्रेम, बन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण और प्रेरणादायक पत्रिका है। इसी क्रम में नये रचनाकारों की रचनाएँ संकलित है। साथ में कहानी, लघु कथा, कविता, प्रेरणादायक वाक्य जैसे स्तम्भ है।

आशा है कि सभी प्रिय पाठकों के लिए यह अंक ज्यादा हृदयग्राही, रूचिकर व मर्मस्पर्शी होगा।

कन्हैया लाल

अहिल्याबाई होलकर

भारत की भूमि ने ऐसे–ऐसे महान् नारियों को जन्म दिया है। जिसने अपने पराक्रम, बल, बुद्धि और अच्छे आचरण से विश्व में एक परचम लहराया है। उनमें से एक नाम है मालवा की महारानी अहिल्याबाई होल्कर का।

महारानी अहिल्याबाई होलकर भारत के मालवा साम्राज्य की मराठा होलकर महारानी थी। अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर के छौंड़ी ग्राम में हुआ। उनके पिता मंकोजी राव शिंदे, अपने गाव के पाटिल थे। उस समय महिलायें स्कूल नही जाती थी, लेकिन अहिल्याबाई के पिता ने उन्हें लिखने–पढ़ने लायक पढ़ाया। वह हमेशा से ही अपने साम्राज्य को मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचाने की कोशिश करती रही। बल्कि युद्ध के दौरान वह खुद अपनी सेना में शामिल होकर युद्ध करती थी। उन्होंने तुकोजीराव होलकर को अपनी सेना के सेनापति के रूप में नियुक्त किया था। रानी अहिल्याबाई ने अपने साम्राज्य महेश्वर और इंदौर में काफी मंदिरो का निर्माण भी किया था। इसके साथ ही उन्होंने लोगो के रहने के लिए बहोत सी धर्मशालाएं भी बनवायी, ये सभी धर्मशालाएं उन्होंने मुख्य तीर्थस्थान जैसे गुजरात के द्वारका, काशी विश्वनाथ, वाराणसी का गंगा घाट, उज्जैन, नाशिक, विष्णुपद मंदिर और बैजनाथ के आस–पास ही बनवायी। मुस्लिम आक्रमणकारियों के द्वारा तोड़े हुए मंदिरो को देखकर ही उन्होंने सोमनाथ में शिवजी का मंदिर बनवाया। जो आज भी हिन्दुओं द्वारा पूजा जाता है। इनका विवाह इन्दौर राज्य के संस्थापक महाराज मल्हार राव होलकर के पुत्र खंडेराव से हुआ था। सन् 1745 में अहिल्याबाई को पुत्र हुआ और तीन वर्ष बाद एक कन्या। पुत्र का नाम मालेराव और कन्या का नाम मुक्ताबाई रखा। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने पति के गौरव को जगाया। कुछ ही दिनों में अपने महान पिता के मार्गदर्शन में खण्डेराव एक अच्छे सिपाही बन गये। मल्हारराव को भी देखकर संतोष होने लगा। पुत्र–वधू अहिल्याबाई को भी वह राजकाज की शिक्षा देते रहते थे। उनकी बुद्धि और चतुराई से वह बहुत प्रसन्न होते थे। मल्हारराव के जीवन काल में ही उनके पुत्र खंडेराव का निधन 1754 ई. में हो गया था। अतः मल्हार राव के निधन के बाद रानी अहिल्याबाई ने राज्य का शासन – भार सम्भाला था। रानी अहिल्याबाई ने 1795 ई. में अपनी मृत्यु पर्यन्त बड़ी कुशलता से राज्य का शासन चलाया। उनकी गणना आदर्श शासकों में की जाती है। वे अपनी उदारता और प्रजा वत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके एक

ही पुत्र था मालेराव जो 1766 ई. में दिवंगत हो गया। 1767 ई. में अहिल्याबाई ने तुकोजी होलकर को सेनापति नियुक्त किया।

रानी अहिल्याबाई अपनी राजधानी महेश्वर ले गईं। वहां उन्होंने 18वीं सदी का बेहतरीन और आलीशान अहिल्या महल बनवाया। पवित्र नर्मदा नदी के किनारे बनाए गए इस महल के ईर्द-गिर्द बनी राजधानी की पहचान बनी टेक्सटाइल इंडस्ट्री। उस दौरान महेश्वर साहित्य, मूर्तिकला, संगीत और कला के क्षेत्र में एक गढ़ बन चुका था। मराठी कवि मोरोपंत, शाहिर अनंतफंडी और संस्कृत विद्वान खुलासी राम उनके कालखंड के महान व्यक्तित्व थे। एक बुद्धिमान, तीक्ष्ण सोच और स्वस्फूर्त शासक के तौर पर अहिल्याबाई को याद किया जाता है। हर दिन वह अपनी प्रजा से बात करती थी। उनकी समस्याएं सुनती थी। उनके कालखंड (1767-1795) में रानी अहिल्याबाई ने ऐसे कई काम किए कि लोग आज भी उनका नाम लेते हैं। अपने साम्राज्य को उन्होंने समृद्ध बनाया। उन्होंने सरकारी पैसा बेहद बुद्धिमानी से कई किले, विश्राम गृह, कुएं और सड़कें बनवाने पर खर्च किया। वह लोगों के साथ त्योहार मनाती और हिंदू मंदिरों को दान देती। अहिल्याबाई का मानना था कि धन, प्रजा व ईश्वर की दी हुई वह धरोहर स्वरूप निधि है, जिसकी मैं मालिक नहीं बल्कि उसके प्रजाहित में उपयोग की जिम्मेदार संरक्षक हूँ । उत्तराधिकारी न होने की स्थिति में अहिल्याबाई ने प्रजा को दत्तक लेने का व स्वाभिमान पूर्वक जीने का अधिकार दिया। प्रजा के सुख दुख की जानकारी वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप प्रजा से से मिलकर लेतीं तथा न्याय-पूर्वक निर्णय देती थीं। उनके राज्य में जाति भेद को कोई मान्यता नहीं थी व सारी प्रजा समान रूप से आदर की हकदार थी।

इसका असर यह था कि अनेक बार लोग निजामशाही व पेशवाशाही शासन छोड़कर इनके राज्य में आकर बसने की इच्छा स्वयं इनसे व्यक्त किया करते थे। अहिल्याबाई के राज्य में प्रजा पूरी तरह सुखी व संतुष्ट थी क्योंकि उनके विचार में प्रजा का संतोष ही राज्य का मुख्य कार्य होता है। लोकमाता अहिल्या का मानना था कि प्रजा का पालन संतान की तरह करना ही राजधर्म है ।

अहिल्याबाई किसी बड़े भारी राज्य की रानी नहीं थीं, बल्कि एक छोटे भू-भाग पर उनका राज्य कायम था और उनका कार्यक्षेत्र अपेक्षाकृत सीमित था, इसके बावजूद जनकल्याण के लिए उन्होंने जो कुछ किया, वह आश्चर्यचकित करने वाला है, वह चिरस्मरणीय है। राज्य की सत्ता पर बैठने के पूर्व ही उन्होंने अपने पति, पुत्र सहित अपने सभी परिजनों को खो दिया था। इसके बाद भी प्रजा हितार्थ किये गए उनके जनकल्याण के कार्य प्रशंसनीय हैं।

उन्होंने ने 1777 में विश्व प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का पुनः निर्माण कराया। शिव की भक्त अहिल्याबाई का सारा जीवन वैराग्य, कर्त्तव्य-पालन और परमार्थ की साधना का बन गया। मुस्लिम आक्रमणकारियों के द्वारा तोड़े हुए मंदिरों को देखकर ही उन्होंने सोमनाथ में शिव का मंदिर बनवाया। जो शिवभक्तों के द्वारा आज भी पूजा जाता है। शिवपूजन के बिना मुंह में पानी की एक बूंद नहीं जाने देती थीं। सारा राज्य उन्होंने शंकर को

अर्पित कर रखा था और आप उनकी सेविका बनकर शासन चलाती थीं।

शिव के प्रति उनके समर्पण भाव का पता इस बात से चलता है कि अहिल्याबाई राजाज्ञाओं पर हस्ताक्षर करते समय अपना नाम नहीं लिखती थी, बल्कि पत्र के नीचे नीचे केवल श्री शंकर लिख देती थी। उनके रुपयों पर शिवलिंग और बेल पत्र का चित्र और पैसों पर नंदी का चित्र अंकित है। कहा जाता है कि तब से लेकर भारतीय स्वराज्य की प्राप्ति तक उनके बाद में जितने नरेश इंदौर के सिंहासन पर आये सबकी राजाज्ञाऐं जब तक कि श्रीशंकर की नाम से जारी नहीं होती, तब तक वह राजाज्ञा नहीं मानी जाती थी और उस पर अमल भी नहीं होता था। उन्होंने स्त्रियों की सेना बनाई, लेकिन वे यह बात अच्छी तरह से जानती थीं कि पेशवा के आगे उनकी सेना कमजोर थी। इसलिए उन्होंने पेशवा को यह समाचार भेजा कि यदि वह स्त्री सेना से जीत हासिल भी कर लेंगे, तो उनकी कीर्ति और यश में कोई बढ़ोत्तरी नहीं होगी, दुनिया यही कहेगी कि स्त्रियों की सेना से ही तो जीते हैं और अगर आप स्त्रियों की सेना से हार गये, तो कितनी जग हंसाई होगी आप इसका अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

अहिल्याबाई की यह बुद्धिमानी काम कर गई और पेशवा ने आक्रमण करने का विचार बदल दिया। इसके बाद महारानी पर दत्तक पुत्र लेने का भी दबाव बढ़ने लगा, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे प्रजा को ही अपना सबकुछ मानती थीं। उनके इस फैसले के बाद राजपूतों ने उनके खिलाफ विद्रोह छेड़ दिया, लेकिन रानी ने कुशलतापूर्वक उस विद्रोह का ही दमन कर दिया। अपनी कुशाग्र बुद्धि का प्रयोग करते हुए रानी अहिल्याबाई होलकर ने मालवा के खजाने को फिर से भर दिया। इस महान नारी कि 13 अगस्त सन् 1795 को जीवन – लीला समाप्त हो गई।

✍ **अमित कुमार साहु**

उम्मीद पर दुनिया कायम है

माना कि आज मुसीबत बहुत है
पर हम बैठे इसी उम्मीद पर
कि फिर लौट आएगें बाजारों में रौनक।
उम्मीद है मेरे मालिक
कि तेरे दर पर मैं जल्द आऊंगी
अगर ना लु उम्मीद का सहारा
तो आज ही भयभीत हो जाऊंगी।
चारों तरफ है हाहाकार
जाने कितनों से दूर हुये प्रियजन
पर उम्मीद है देगा तु हिम्मत
सारे गम को सह जाने की।
ना बिछडेंगें अब और कोई अपनों से
यही उम्मीद लिये सब तेरी ओर ताके।
बारिश की दो बूदों की आश लिये
हम सब बैठे वक्त बदलने का इंतजार लिये
ना रखे उम्मीद तो फिर क्या करें
जिंदगी जीने के लिये बेहतर दिनों का
इंतजार करें।
उम्मीद मत छोड़ना प्यारे दोस्तों
कल का दिन खुशियां चौखट पर लायेगा
फिर माली सींचेगा फूलों को
और बागान फूलों से महकायेगा।

✍ **प्रियंका पेड़ीवाल अग्रवाल**
बिराटनगर, नेपाल

घुघँट

समाज की कुछ प्रथाएं है जो शायद अच्छी से ज्यादा लोगों को दबा के रखने वाली है। ऐसे परम्परा जिसका परिणाम अच्छा के साथ बुरा भी है।

अभी मुश्किल से 10 दिन भी नहीं हुए विजय की शादी को जिसकी पत्नी डॉक्टर है एक नजदीक के अस्पताल में। वह पढ़ी लिखी नई जमाने की स्वछंद विचारों की लड़की है। सारा परिवार उस से खुश है। बहू बड़ी अच्छी है जो नौकरी भी करती है और समय निकाल कर घर के कामों में भी हाथ बंटा लेती है।

आज मोहल्ले के शर्मा जी की पत्नी घर पे आयी तो बहू ने चाय दिया और प्रणाम किया । उसके बाद वह अपनी सासू मां से बोली, ‘‘मां जी! मुझे कुछ फाइल पढ़नी है मरीज की, मैं अपने कमरे में जाऊं।’’ उसकी सासू मां ने भी आज्ञा दे दी।

शर्मा जी की पत्नी ने कहा कि तुम्हारी बहु की आदतें तो बाकी सब ठीक और पढ़ी लिखी भी है बस घूँघट नहीं रखती। दिन भर तो वैसे अपनी डॉक्टर पोशाक में रहती लेकिन पर्दा उसमें नहीं है ।

विजय की माँ ने मुस्कुराते हुए कहा कि वह नए जमाने की पढ़ी–लिखी और अपने पैर पर खड़ी लड़की है। वह कहाँ इन पर्दे और घर में दबा के रखी जाने वाली बहुओं जैसी है, जैसे हम लोग थे और ऐसे होना भी नहीं चाहिए। घूँघट से ज्यादा जरूरी सम्मान देना है।

इस घटना को काफी समय बीत चुके हैं। आज शर्मा जी के यहाँ पुलिस आयी थी सुना है उनकी बहू ने अपनी सास और पति पर दहेज का आरोप लगाया है। सुनने में आ रहा कि यह बात भी गलत है क्योंकि शर्मा जी का परिवार ऐसे नहीं। उन्होंने अपने बेटे की शादी गरीब घर की लड़की से इसलिए किया जिससे वह आये और सब सम्भाल ले क्योंकि उन्हें कामकाजी घरेलू बहु चाहिए न कि बाहर कमाने वाली।

पुलिस के आने के बाद शर्मा जी की बहू घूँघट में लड़ते हुए बाहर निकली और सड़क पर न जाने क्या क्या बोलने लगी अपने सास और ससुर को। चलो किसी तरह मामला शान्त हुआ और कुछ दिन बाद पता चला कि शर्मा जी की बहू ने अपनी सास से अलग रहने के लिए ये सब नाटक किया था। ये सब जानकर मोहल्ले वाले कहने लगे, बहु अगर घूँघट में हो तो जरूरी नहीं वह सम्मान देगी और बिना घूँघट वाली नहीं। कभी–कभी बिना घूँघट वाली बहु पर्दे वाली से ज्यादा अच्छी और सम्मान देने वाली होती है।

समाज की व्याप्त ये विचार की बहू का मतलब घूँघट में दबी स्त्री नहीं बल्कि घर से निकलकर अपने सास–ससुर, माता–पिता और पति का सम्मान बढ़ाना भी है।

✍ **शुभम पांडेय गगन**
अयोध्या उत्तर प्रदेश

ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियां

हमारे देश में ऑनलाइन शिक्षा को 90 के दशक के दौरान सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के अधिक से अधिक उपयोग के मद्देनजर गति मिली। COVID–19 के बाद, छात्रों और शिक्षकों सहित स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों को सीखने और निर्देश के वैकल्पिक तरीके के रूप में ऑनलाइन शिक्षा मंच पर जाना पड़ा। सीखने का वैकल्पिक तरीका ऑनलाइन, टीवी, मोबाइल, रेडियो, पाठ्यपुस्तकों आदि के माध्यम से उपलब्ध कराया गया है। सरकार बच्चों को उनके घरों पर शिक्षा प्रदान करने के लिए वैकल्पिक माध्यमों जैसे कि शिक्षार्थियों के घरों में पाठ्यपुस्तकों के वितरण के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने का प्रयास कर रही है, शिक्षकों द्वारा टेलीफोनिक मार्गदर्शन, विभिन्न मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन और डिजिटल सामग्री, शिक्षकों द्वारा संचालित ऑनलाइन कक्षाएं, एनसीईआरटी द्वारा जारी वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर के माध्यम से गतिविधि आधारित शिक्षा आदि। इसलिए औपचारिक शिक्षा जो स्कूलों में चेहरे के रूप में होती है– बातचीत का सामना करने के लिए ऊपर निर्दिष्ट अन्य तरीकों के उपयोग द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। शिक्षकों के समय के असमान वितरण, तकनीकी उपकरणों तक छात्रों की पहुंच में अंतर, और कई मामलों में घरों में सीखने के लिए समर्थन की कमी जैसे विभिन्न कारकों के कारण इन वैकल्पिक तरीकों की कुछ सीमाएं प्रतीत होती हैं।

मार्च, 2020 से छात्र स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। नए शैक्षणिक वर्ष में, हालांकि स्कूल और शिक्षक अपने सभी छात्रों को किसी न किसी तरह से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहे हैं, फिर भी कुछ छात्र वंचित हैं। इसलिए, जब स्कूल फिर से खुलेंगे, तो पूरी संभावना है कि एक ही कक्षा के छात्रों के सीखने के स्तर में एक स्पष्ट अंतर मौजूद होगा। छात्र अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं। कुछ छात्र ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें अपने माता–पिता के काम की प्रकृति के कारण जोखिम होने की संभावना है। उनका दिमाग लगातार तनाव में हो सकता है, और इसलिए, ऐसे छात्र अन्य बच्चों की तरह खुशी से सीखने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। जो बच्चे अपने माता–पिता के साथ अपने गृहनगर चले गए हैं, वे स्कूली शिक्षा खो सकते हैं क्योंकि वे गृहनगर के किसी स्कूल में नामांकित नहीं हैं, और न ही उन्हें इस बात की जानकारी है कि राज्य सरकार उन्हें क्या पेशकश कर रही है। इसके अलावा, हो सकता है कि उनका उस शहर के शिक्षकों से संपर्क टूट गया हो जहां उनके माता–पिता पहले काम कर रहे थे। ऐसे बच्चों की शिक्षा एक गंभीर मुद्दा है।

समस्याओं को दूर करने के लिए सरकार द्वारा हर स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। अब तक 2000 से अधिक पाठ्यक्रम विकसित किए गए हैं, और 4200 से अधिक ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की पेशकश की गई है। इन पाठ्यक्रमों में करीब 1.8 करोड़ छात्रों ने दाखिला लिया है। जुलाई, 2020 सेमेस्टर के लिए, 656 पाठ्यक्रम स्वयं प्लेटफार्म पर पेश किए गए हैं। इनके अलावा, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, दीक्षा, ई–पाठशाला, और ई–पीजी पाठशाला,

वर्चुअल लैब्स, फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, स्पोकन ट्यूटोरियल आदि के माध्यम से ऑनलाइन संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा के मानकीकरण के संबंध में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पहले यूजीसी (ऑनलाइन पाठ्यक्रम या कार्यक्रम) विनियम, 2018 को सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा और उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के डिग्री कार्यक्रमों में ऑनलाइन कार्यक्रमों की पेशकश के लिए अधिसूचित किया था।

विभिन्न पाठ्यक्रमों के ऑनलाइन शिक्षण से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए छात्र स्वयं कुछ कदम उठा सकते हैं। जिन छात्रों के पास इलेक्ट्रॉनिक गैजेट नहीं है, उन्हें ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा वाले पड़ोस के छात्रों के साथ जोड़ा जा सकता है। ऐसे छात्र अन्य प्रसारण संसाधनों जैसे टीवी–रेडियो का उपयोग कर सकते हैं। सेल्फ स्टडी भी एक विकल्प है। विभिन्न डाक सेवाओं या शिक्षकों द्वारा उनके घरों पर मुद्रित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जा सकती है। सरकार को उन छात्रों को इलेक्ट्रॉनिक या तकनीकी गैजेट उपलब्ध कराना चाहिए जिनके पास ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा नहीं है। सामुदायिक मोबाइल बैंक बनाया जा सकता है जहां लोग पुराने लेकिन कार्यात्मक मोबाइल फोन दान कर सकते हैं। संसाधनों की अनुपलब्धता के कारण ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थ छात्रों के लिए स्कूलों में कक्षाओं की व्यवस्था की जा सकती है। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए एंड्राइड फोन–गैजेट प्राप्त करने के लिए सरकारों, चौरिटी संगठनों, सीएसआर के तहत कंपनियों और पूर्व छात्रों से मदद ली जा सकती है। ऐसे छात्रों को आस–पास रहने वाले अन्य छात्रों द्वारा असाइनमेंट–होमवर्क आदि की जानकारी दी जा सकती है। जिन छात्रों के पास तकनीकी सहायता नहीं है, उन्हें स्कूल के अधिकारियों द्वारा डाक के माध्यम से असाइनमेंट की हार्ड कॉपी की आपूर्ति की जा सकती है।

✍सलिल सरोज
नई दिल्ली

ये क्या हो रहा

किस दौर में जी रहें हैं ये क्या हो रहा है,

अवाम बेफिक्र है और सियासत रो रहा है।

मिलकियत जिनकी हैं, मातम वही मनातें,

और वक्त बहती गंगा में हाथ धो रहा है।

मुश्किलें तो मशगूल हैं महफिलें जमाने में,

मसीहा मूंद कर आँखे चुपचाप सो रहा है।

गजब अंदाज है गरीबी में जीने वालो का,

होने देता है उसके साथ, जो कुछ हो रहा है

तू क्यों अजय इतनी बेगारी करता रहता है,

बंजर गजलों में हालात के बीज बो रहा।

✍ **अजय प्रसाद**

यादों के सहारे

अचानक आँख खुलती है अपने आपको अस्पताल में पाकर नीलिमा पूछती है यहां कैसे आई मैं, कौन लाया मुझे यहां ? डॉक्टर कहती हैं इतने सारे सवाल एक साथ, थोड़ी साँस तो ले लो।

तुम्हें कुछ नहीं हुआ, बस एक छोटा सा एक्सिडेंट हुआ था तुम्हारे साथ काम करने वाले सहकर्मी तुम्हे अस्पताल ले आए, और मैं तुम्हारा इलाज कर रहीं हूँ। तुम ठीक हो ? हाँ मैं तुम्हारे घर पर फोन करवा दी हूँ। शायद कोई आ जाए लेने ये कहते हुए डॉक्टर चली जाती हैं।

ये सुनकर नीलिमा चार साल पीछे चली जाती हैं। (सोचते हुए) कभी मैनें ये नहीं सोचा था कि एक दिन ऐसे भी आयेंगे जो मेरी सुधि लेने वाला कोई नहीं होगा। सागर तुम साथ होते तो आज ऐसा नहीं होता। नीलिमा की आँखे नम हो जाती हैं जब तुम थे तो मैने कभी घूंघट न खोली , तेरी ही चारदीवारी को पूरी दुनिया समझ बैठी थीं। तुम्हारा वो मेरे लिए साड़ी पसंद करना, ज्वेलरी अपनी पसंद से लाना। अपने अंदाज में कहना, औरत है सारी कपड़ा पसंद करने आता ही नहीं है। मुझे कहना–दिमाग नाम के चीजे नहीं है, हमेशा जब देखो तो उल्टी सीधी हरकत करती रहती है, दिमाग नहीं लगाती । सच बताऊं मै भी जान बूझकर ये हरकतें करती थी, वो तुम्हारा चेहरा जब लाल होता था तो तुम पिघले हुए कुल्फी जैसे लगते थे। वो चेहरे देखकर मुझे बहुत हंसी आती थी, मुझे हंसते देखकर तुम भी अपनी हंसी रोक नहीं पाते थे। तुम्हारा वो देर रात तक जाग कर– समझाना, देख नीलिमा तू चिंता मत कर हमको पांच बेटी है तो क्या हुआ सबको पढ़ा लिखा के बड़ा ऑफिसर बनाएंगे, बड़ा घर में शादी करेंगे। तू देखना जब हमारी बिटिया सब बड़ा ऑफिसर बनेगी न तो अपने आप लड़के वाले हमारी बिटिया का हाथ मांगने आयेंगे। प्यार करने का तरीका भी बड़ा अजीब था। दिलों में सागर भरे रखते और जवान पर बेरुखी ।

सच बताऊं मैं भी तुमसे बहुत प्यार करती थी। कितनी हंसती खिलखिलाती दुनिया थी मेरी, पता नहीं किसकी बुरी नजर लग गई। तुम मुझे इस वीरान दुनिया में अकेले छोड़ कर चले गए। तुम बहुत याद आते हो सागर।

देखो न हमारी क्या हाल हो गई है। तुम्हारे जाने से बच्चों की पढ़ाई भी छूट गई हैं इन सबको पालने के लिए अपने जीने के लिए मै एक नौकरी कर रहीं हूँ आज वहीं जाते हुए मेरा एक्सिडेंट हो गया है। मै निःसहाय हुँ, नौकरी करती हूं तो लोग न जाने क्या क्या बात बनाते हैं, पर मै क्या करूं मुझे अपने बच्चों को को देखकर तरस आती है। मैं अपने जीते जी अपने बच्चो को इस हाल में नहीं देख सकती।

अपनी वहीं मीठी की मां मुझे कहती रहती हैं। मत देखो पीछे मुड़कर दुनिया ऐसे ही तेरे ऊपर बात बनायेगी भूखी रहोगी फिर भी कोई पूछने वाला नहीं होगा। मै भी एक औरत हूं। तुम्हारी व्यथा को मै अच्छी तरह समझ सकती हूं। तुम अपना काम करो, कमाकर खाना कोई शर्म की बात नहीं है। तुम्हारी

यादें मुझे हमेशा आती रहती हैं नीलिमा के आँखों में आंसू छलक आती है।

डाक्टर कहती है, नीलिमा तुम्हे कोई लेने नहीं आया? ठीक है मैं तुम्हे घर भिजवाने का प्रबन्ध करती हूँ।

इतने में किसी युवक की आवाज आती है। कहता है, ''मै आया हूँ नीलिमा को लेने डॉक्टर साहिबा'' पर तुम हो कौन? जब तक युवक कुछ बोलता, युवक की बात काटते हुए नीलिमा बोल उठती है। जी, मै इन्हे जानती हूँ। ये हमारे ही साथ काम करते है। बड़े ही नेक इंसान है इनका नाम प्रताप है ।

नर्श डिसचार्ज का पेपर प्रताप को पकड़ाते हुए कहती है। ये नीलिमा जी का इलाज का बिल हैं। बिल भर कर प्रताप नीलिमा को लेकर वहां से चल देता है। नीलिमा पूछ बैठती है कितना बिल आया प्रताप? जो भी आया मैनें भर दिया आप क्यों परेशान हो रही हैं। आप फिलहाल आराम कीजिए।

अगले दिन नीलिमा कुछ रुपए लेकर प्रताप को देती है और कहती है शायद कुछ कम है रख लो अगले महीने बचे रुपए दे दूंगी। प्रताप लेने से इनकार कर देता है।ये रुपए आप ही रखिए आपको काम आएगा पर नीलिमा को ये नागवार गुजरता है। कहती है, ये अभी ले लो प्रताप जब हमे जरूरत होगी तो मैं मांग लूंगी। नीलिमा के समझाने पर प्रताप रुपए ले लेता है। प्रताप नीलिमा से कहता है नीलिमा इतने सारे काम अकेले कैसे कर लेती हैं आप? अरे, अकेले कहां हुँ। मै मेरे साथ मेरे बच्चें है, तुम्हारे जैसे दोस्त है। सच पूछो तो बेटियां हमारी जान हैं। अपनी प्यारी प्यारी बातों से उल्टी सीधी सवालों में उलझा कर रखी रहती है अजीब अजीब फरमाइशें काम करने की क्षमता को बढ़ा देती है बच्चों की बातें हमारे अंदर पूरी जोश भर देते है।

प्रताप कह बैठता है नीलिमा वाकई में आप जितनी ही खूबसूरत हो उतनी ही आपकी बातें। मैं आप से कुछ कहना चाहता हूँ। नीलिमा कहती है हां–हां कहों ना क्या कहना है तुम्हे? प्रताप बहुत हिम्मत जुटा कर कहना चाहता हैं पर कह नहीं पाता। कुछ नहीं कभी और कहूंगा चल देता है।

आखिरकार एक दिन कह ही बैठता है नीलिमा आप मुझे बहुत अच्छी लगती हैं, मैं आप से प्यार करता हूँ। शादी करना चाहता हूं, आपके साथ नई दुनिया बसाना चाहता हूं । ये सुनकर नीलिमा सन्न रह जाती है। प्रताप को समझाती है कहती है। प्रताप दोस्ती और प्यार में बहुत अंतर है, सॉरी, मैं तुम्हें दोस्त से ज्यादा कुछ नहीं बना सकती। मैं अपने पति की जगह किसी और को नहीं दे सकती क्योंकि आज भी मैं अपने पति से उतना ही प्यार करती हूं,जितना पहले किया करती थी। आज भी दिलों दिमाग में बसते हैं उन्हीं के सहारे जीना चाहती हूँ। तुम मेरे अच्छे दोस्त हो दोस्त ही रहो, मैं अपनी दोस्ती को नहीं खोना चाहती, खोने का दर्द क्या होता है मेरे से बेहतर कौन जान सकता हैं।

✍**रानी प्रियंका वल्लरी**
बहादुरगढ़ हरियाणा

जुबान तेज या तलवार

पुरानी कहावत है कि जुबान कैंची की तरह चलती है और कतर–कतर बात को काटती रहती है। ये कहावत उन पर लागू होती है जो बिना सोचे विचारे अनावश्यक रुप से औरों की बातचीत के मध्य कूदते रहते हैं। जुबान को अनेक तरह की उपमाओं से भी नवाजने का प्रचलन है, जैसे तीखी जुबान, मीठी जुबान, प्यारी जुबान, सम्मोहित करने वाली जुबान, शहद भरी जुबान, जहरीली जुबान, नश्तर चलाने वाली जुबान, बात कतरने वाली जुबान आदि–आदि।

जहाँ तक जुबान और तलवार की तुलना का प्रश्न है, तो दोनों ही अस्त्र हैं। दोनों ही तीक्ष्ण धार वाले और परिणाम बदलने वाले हैं। दोनों की वार करने की और मारक क्षमता भी अपने आप में बेजोड़ होती है और दोनों से ही घाव बहुत गहरे लगने के साथ ही सबकुछ परिमार्जित करने में अव्वल हैं। बस तलवार का घाव दिखता है, जबकि जुबान का घाव अदृश्य रहता है।

तलवार लौह धातु की बनी, वजन में भारी होने के कारण बहुत गहरे तक घाव करने में सक्षम होती है।

किन्तु, जुबान तलवार की तुलना में ज्यादा ताकतवर और ज्यादा गहरा घाव करने वाली बहुत ही तेज मीठी अथवा तीखी भी होती है। होने को तो जुबान वजन में बहुत ही हल्की और बिना हाड़–मांस की लचीली और पिलपिली सी होती है, परन्तु उसके शस्त्र कड़वे और कटु शब्दों के बने होतें हैं जिनके वार शत्रु को बहुत अधिक दूर रहकर भी हानि पहुंचाने में सक्षम होते हैं। इनका निशाना भी सधा हुआ और पक्का होता है, जो सीधे दिल में जाकर लगता है और शत्रु पीड़ा से तिलमिला और बौखला उठता है। यह इतना गहरा घाव करता है कि जीवनभर नहीं भरता। तलवार का घाव तो समय के गुजरने के साथ–साथ भर भी जाता है और कभी न कभी पूरी तरह ठीक भी हो जाता है परन्तु जुबान से लगाया गया घाव कभी नहीं भरता, चाहे कितना ही लम्बा समय गुजर जाए या लाख जतन कर लिए जाएं।

इस बात से शायद ही कोई सहमत न हो कि तलवार से कहीं ज्यादा घातक और तेज जुबान है। क्योंकि कई बार जुबान का वार इतना घातक होता है कि इसका घाव प्रत्यक्ष दिखाई न देने पर भी सामने वाले की जीवनलीला तक समाप्त कर देने का कारण बन जाता है।

इसके अलावा तलवार सिर्फ घाव देती है लेकिन जुबान न दिखने वाले मारक घाव देने के साथ–साथ मरहम लगाकर शीतलता प्रदान करने का भी काम बखूबी कर सकती है जिसे कर पाना तलवार के वश की बात नहीं। वो तो केवल काटना और मार डालना ही कर सकती है जबकि जुबान मारना और बचाना दोनों कर सकती है।

इस तरह यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जुबान तलवार से अधिक तेज होती है। जुबान का घाव न दिखने के बाद भी पीड़ित व्यक्ति के लिए नासूर बन जाता है और सिर्फ एक ही व्यक्ति नहीं व्यक्तियों, परिवार, समूह तक को प्रभावित कर सकने में सक्षम होता है।

आ. बजरंग लाल केजड़ीवाल (तिनसुकिया, असम) के शब्दों में ''तलवार बड़ी घातक करती गहरे घाव तन पर, जुबां हृदय विदिर्ण कर मारती तिल तिल कर।''

✍**सुधीर श्रीवास्तव**
गोण्डा, उ.प्र.

धरती और हम

अनुमान लगाकर देखो तुम
पृथ्वी में कितनी सुंदरता
सुषमा शोभा बिखरी जाती
नदियों से बह आती ममता।

गुणगान उसी का क्यों न करें
जिसने सुखकर यह सेज दिया
निंद्रा में कहीं न शूल चुभे
तो हरी घास को भेज दिया।

विहगों की बोली में भरती
कैसा मीठापन देखो तो
आखेट उन्हीं का जन करते
अपना छोटापन सोचो तो।

खिलती मुरझाती सब कलियाँ
जीवन संदेश सुना जाती
लेकिन घटती हरियाली से
यह धरा कष्ट कितना पाती।

सायास उगा सकते क्या तुम
भूमिहार हरे से जो जंगल
सदियों का पर्णहरित लगता
मत अविवेकी कर भू समतल।

✍**मधुकर वनमाली**
मुजफ्फरपुर बिहार

मूर्ति

मौन रहकर भी सबकुछ कहती है,
मन में भक्ति बनकर रहती है,
ये स्थित होती है धर्म स्थलों मे,
निर्जीव होकर भी जीवन्त रहती है।

कभी मुस्काती, कभी हंसाती,
डुबोती बचपन को प्यार मे,
खुशी देती है खुद अचल होकर,
जो बिकती है बाजार में।

कभी ये धरकर रूप शहीदों का,
हमको उनकी याद दिलायें,
कभी चँचलता, कभी मृदुलता देकर,
हर मूर्ति जीवन दर्शाए।

कभी तो अपने हास्य विनोद से,
तरह तरह के रंग दिखलाए,
कभी नयन मे करूणा भरकर,
सागर अश्रु मोति छलकाए।

हमेशा सजी नई संवेदनाओं से,
और नई स्फूर्ति से,
पाते हम जीने की प्रेरणा,
इक बेजान मूर्ति से।

✍**आराधना प्रियदर्शनी**
बेंगलुरु,कर्नाटक

तंबाकू से जीवन में विभीषिका

मानव जाति के लिए नीरव घातक (Silent killer) के रूप में चिन्हित तंबाकू सेवन से किस प्रकार मनुष्य जाति को बचाया जा सकता है, इसी को लेकर प्रत्येक वर्ष 31 मई को पूरे विश्व में 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' (World No Tabacco Day) मनाया जाता है। प्रतिवर्ष तंबाकू सेवन से शरीर में होने वाले रोग और इसकी समस्याओं से पूरी दुनिया को मुक्त बनाने के लिये तथा विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी बातों को महत्वपूर्ण ढंग से वैश्विक ध्यान आकर्षित करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। अपनी लक्ष्य को फलप्रद बनाने के लिये, डबल्यूएचओ विश्व तंबाकू निषेध दिवस से संबंधित विशेष थीम को बनाता है। विभिन्न देशों में इस जागरूकता अभियान में वैश्विक सफलता प्राप्ति हेतु बहुत ही सक्रियता से विभिन्न क्षेत्रों से बहुत सारे लोग, गैर–लाभकारी और सार्वजनिक स्वास्थ्य संगठन भाग लेते हैं।

वर्तमान तंबाकू सेवन से विश्व में प्रति छः सेकेंड में एक व्यक्ति की मौत होती है। स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार मानव देह में दिखाई देने वाले 200 प्रकार से भी अधिक कैंसर रोग का मूल कारण किसी भी प्रकार का तंबाकू सेवन है। विश्व में प्रत्येक वर्ष कैंसर रोग से मरने वाले लोगों की संख्या करीबन 80 लाख है और इसका 60 लाख लोग तंबाकू सेवन जनित कैंसर रोग से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते है और यह ध्यान देने की बात है कि हमारे भारतवर्ष में प्रायः 10 लाख लोगों की मौत केवल तंबाकू सेवन जनित रोग के कारण ही होती है।

तंबाकू सेवन समस्त शरीर के लिए हानिकारक है। पुरुषों में 50% और महिला के क्षेत्र में 25% कैंसर रोग तंबाकू सेवन से ही होता है। तथ्य विज्ञान कहते हैं कि एक सिगरेट सेवन से एक व्यक्ति अपने आयु का 14 मिनट कम कर देता है अर्थात अगर एक व्यक्ति एक दिन में 10 सिगरेट सेवन करता है तो वह व्यक्ति अपने आयु का 2 घंटा प्रत्येक दिन कम करता है अर्थात प्रत्येक वर्ष एक व्यक्ति अपनी आयुरेखा 36 दिन कम करते जाते है।

तंबाकू या इसके उत्पादों के इस्तेमाल से होने वाले बीमारियों का लिस्ट दिन–ब–दिन लंबी होती जा रही है। दिल, मुंह, फेफड़ों, ग्रासनली, अग्नाशय, मूत्राशय आदि के कैंसर का होना तो आम बात हो गई है। विशेषज्ञ बताते हैं कि – महिलाओं में जरायू और स्तन कैंसर रोग का प्रधान कारण अति मात्रा में तंबाकू जातिय उत्पादों के सेवन से होता है। बालों का झड़ना, दृष्टि शक्ति कमजोर होना, पत्थरी आदि रोग भी तंबाकू सेवन से हो सकता है। धूम्रपान और धुएं रहित (Smokeless चबाना) दोनों ही समान रूप से जानलेवा हैं। लोग धूम्रपान या तो स्टाइल या फिर स्टेटस के लिए शुरू करते हैं, पर तंबाकू आपके फेफड़ों पर हमला करता है और हृदय और रक्त धमनियों में ऑक्सीजन के आवागमन में बाधा डालता है। तंबाकू प्रजनन क्षमता को भी कमजोर कर सकता है। डेविड बिर्न ने कहा है, **''तंबाकू का वास्तविक चेहरा बीमारी, मौत और डर है–**

शालिनी

ना कि चमक और कृत्रिमता जो तंबाकू उद्योग के नशीली दवाएँ बेचने वाले लोग हमें दिखाने की कोशिश करते है।"

हमारे देश के पूर्वात्तर में कैंसर रोग के ज्यादा मामले सामने आते है। इनमें से मुंह में होने वाले कैंसर रोगी (Oral Cancer) की संख्या ज्यादा है। इसका मूल कारण इन प्रदेशों के ज्यादा तर लोग विभिन्न प्रकार के तंबाकू, धुम्रपान संबंधी उत्पाद और अत्याधिक पान – सुपारी खाते है। मुंह के कैंसर रोग का केमोथेरेपी, रेडिएशन और ऑपरेशन तीन प्रकार से चिकित्सा किया जाता है। चिकित्सक के अनुसार इस बुरे अभ्यास को त्याग कर प्रारंभ में ही चिकित्सा करवाने से इस रोग को निरामय किया जा सकता है साथ ही साथ असमयिक मृत्यु से बचा जा सकता है। आपके द्वारा उपभोग किए जाने वाले तंबाकू के ब्रांड या प्रकार को देखकर कभी गुमराह न हो कि आपको नुकसान नहीं पहुंचाएगा परंतु विश्वास कीजिए किसी भी प्रकार का तंबाकू आपके जीवन में विभीषिका ला सकतें हैं।

इस कोरोना महामारी के दौरान विश्व स्वास्थ्य संगठन और विभिन्न शोधकर्ताओं ने सभी को आगाह किया है कि गुटखा, खैनी और सिगरेट के सेवन से कमजोर हुए फेफड़े वाले लोगों को कोरोना संक्रमण होने का खतरा सामान्य व्यक्ति से ज्यादा है।

आँकड़ों के अनुसार वर्ष 1999 –2000 मैं तंबाकू जातियों सामग्री उत्पादन करने वाले कंपनियों ने भारत सरकार को 7415 करोड़ रुपया कर अदा किया था और उसी वर्ष लोगों की तंबाकू जनित रोग चिकित्सा हेतु सरकार ने खर्च किए थे 27761 करोड़ रुपया और वर्ष 1995 में लगभग 37.6% धुम्रपान करने वाले लोगों की संख्या में कमी आयी है जबकि 2006 में ये 20.8% है। यानी जितने पैसे का राजस्व सरकार इन पदार्थों को बेचने या उत्पादन करने वाले कंपनियों से लेते हैं इससे कई अधिक पैसे इन पदार्थों के सेवन से बीमार पड़ने वाले रोगियों पर खर्च करते हैं, इसलिए शासन को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार कर ऐसी योजनाओं को बंद करना चाहिए।

वैसे सरकार ने इसकी सेवन से होने वाली हानि को देखते हुए अधिनियम भी बनाए है, परंतु दुःख का विषय है कि हम खुद ही इसके उत्पादन में बढ़ावा देते है इतना कुछ जानकार भी। परंतु कुछ मानवता दिखाए हुए जनकल्याण हेतु हम इसकी उत्पादन न करके कुछ और व्यवसाय भी जरूर कर सकते है।

सिगरेट एवं तंबाकू प्रोडक्ट अधिनियम (कोटपा) अधिनियम 2003 के अनुसार –

धारा4– सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध है 200 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। होटल, रेस्तरां, सिनेमा हॉल, मॉल आदि के मालिकों को 60 सेमी. 30 सेमी बोर्ड पर नो स्मोकिंग बोर्ड प्रदर्शित करना चाहिए।

धारा5– तंबाकू उत्पादों के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष विज्ञापन पर प्रतिबंध। तम्बाकू उत्पाद बेचने वाली दुकानों को 60सेमी –45सेमी का बोर्ड प्रदर्शित करना चाहिए, जिसमें तम्बाकू के कारण कैंसर होते हैं। उल्लंघन करने पर1000 रुपये से 5000 रुपये जुर्माना या 10–5 साल की कैद हो

सकती है। धारा6(क)– 18 वर्ष से कम आयु के नाबालकों को तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर प्रतिबंध।

धारा6(ख)– शिक्षा संस्थान के 100 यार्ड के भीतर तंबाकू उत्पादों की बिक्री दंडनीय है। उल्लंघन करने पर जूर्माना हो सकता है।

अभी तंबाकू वाले पैकेट में 80% कैंसर रोग का चित्र प्रदर्शित होना अनिवार्य है। सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान निषेध नियम–2008 के अनुसार किसी सार्वजनिक स्थान यथा कार्यस्थलों, शॉपिंग मॉलों, हवाई अड्डों, बस और रेलवे स्टेशनों, होटलों, सिनेमा घरों की दुकानों और रेस्तराओं, जहां धूम्रपान न करने वाले लोग मौजूद हो सकते हैं। वहां धूम्रपान करने की अनुमति नहीं है। क्योंकि धूम्रपान कर रहे व्यक्ति के आस–पास रहने वाले व्यक्ति को भी सेवन करनेवाले व्यक्ति समान ही नुकसान होता है इसलिए सार्वजनिक स्थलों में धूम्रपान करना वर्जित करना चाहिए।

तंबाकू मारता है एक व्यक्ति के साथ पूरे परिवार को भी। यह भी जान लीजिए अगर आप मर गये, आप अपने जीवन का बहुत महत्वपूर्ण भाग खो देंगे। जीवन ईश्वर द्वारा दिया गया सबसे बड़ा वरदान है, इसका लुफ्त उठाइए। सुख–दुख का हिसाब न करके अपने जीवन को बेहतर ढंग से जीना सीखिए। इस कुअभ्यास को आज ही से खुद भी छोड़े और दूसरों को भी छोड़ने में मदद करे। तंबाकू सेवनकारी व्यक्ति निकोटिन च्यूइंगम, पैचेज, स्प्रे, इन्हेलर जैसे पदार्थो का उपयोग डॉक्टर की देखरेख में ले सकते हैं। इसके अवाला कुछ हेल्पलाइन नंबर है– जो आपको इससे निजात पाने में मदद कर सकती हैं।

✍ **मंजूरी डेका, शिक्षिका**
विश्वनाथ, असम

मुस्कान

चेहरे की सुंदरता बढाती
आंखों में खुशियों का संचार करती
तन मन को ऊर्जा से भरपूर करती
अपनों को करीब लाती
एक प्यारी सी मुस्कान।
देख जिसे भूल जाएं अपनी आन
देते जिसे सभी सम्मान
भूल कर मान – अपमान
दें एक प्यारी सी मुस्कान।
मुस्कान से जीवन रंग जाएगा
खुशियों से हर पल मुस्कुराएगा
सबका प्यारा तुम्हें बनाएगा
अनजान ना तुमसे कोई रह पाएगा
दें सदा एक प्यारी सी मुस्कान।
ईश्वर का है यह वरदान
इसी में है सबका कल्याण
आओ बढ़ाएं अपने कुल की शान
देकर एक सुंदर मुस्कान।
क्या देना, क्या लेना किसी को,
खुश रहे सभी, है मंजूर खुदी को,
हुकुमी हुकुम चला रहा है
वो दाता, सब कुछ लुटा रहा है
मेरे दामन को खुशियों से भर रहा है
खुश रहकर क्यों ना रखूं मैं ?
अपने परम पिता का मान
पाकर उनका अनमोल वरदान
हर्षित रहूं सदा,
देकर एक प्यारी सी मुस्कान।।

✍ **ब्रह्मकुमारी मधुमिता 'सृष्टि'**
बिहार

यादें

‘‘पापा आपसे कुछ नहीं बनता है! दवा भी नहीं पी पा रहे हैं ! और चम्मच में भरी सारी दवा ही फैला दी! ऐसा कैसे चलेगा? ‘‘जवान बेटे ने बिस्तर पर लेटे, सत्तर वर्षीय रिटायर्ड बाप को डंपटते हुए कहा!’’

‘‘हां बेटा दिक्कत तो है ! ‘‘बुदबुदाते हुए पिता बोले!

‘‘लगता है कि धीरे–धीरे पापा की याद्दाश्त जा रही है !’’ धीरे से बेटे ने अपनी पत्नी की ओर मुखातिब होते हुए कहा!

पर यह बेटे का भ्रम था! पिता को गुजरे वक्त के सारे वाक्या याद थे! वे बेटे के बचपन के दिनों में पहुंच गए! बेटा अब नन्हें बालक के रूप में उनके सामने था, और तीन पहिये की साइकिल चलाने की कोशिश कर रहा था!

‘‘पापा–पापा, मुझसे नहीं बनेगी यह साइकिल चलाते! मैं तो बार–बार गिर जाता हूँ!’’ बेटे ने तुतलाते हुए कहा!

‘‘नहीं बेटा, जरूर बनेगी! क्यों नहीं बनेगी? अरे मेरा स्ट्रांग बेटा सब कुछ कर सकता है! मेरा बेटा, न केवल एक दिन साइकिल के साथ मोटर साइकिल, कार चलाएगा, बल्कि–बल्कि बड़ा होकर मेरा भी सहारा बनेगा!’’

यादों की परतें खुलते ही पिता की आँखें भर आईं! वे वर्तमान में वापस लौट आए, और हिम्मत जुटाकर खुद का सहारा खुद बनने की तैयारी करने लगे!

✍ **प्रो. शरद नारायण खरे**
मंडला (म.प्र)

अफवाह

अफवाह ही अफवाह है चहूं ओर देखो,
ना सच्चाई है दिखती चहूं ओर देखो ।

अफवाहों के घेरे में घूमती जाए ये जिन्दगी,
सुकून फिर भला कैसे पाएं ये जिन्दगी,
ना आना अफवाहों के घेरे में देखो
बच के तुम अफवाहों से रहना ये देखो।

ना हिन्दू था कोई, ना मुसलमान था ,
खुदा ने बनाया जो वो इन्सान था
एक इन्सां ने इन्सां के किए टूकड़े देखो,
बना कोई मुस्लिम, कोई हिन्दू देखो ।

कोई कहता मुझको है हिन्दू ने मारा,
कोई कहता मुझको है मुस्लिम ने मारा,
कैसे भाई का भाई काटे गला तुम ये देखो,
नहीं है किसी को शर्मो–हया तुम ये देखो।

लहु का जो है रंग सभी का ही सम सा ,
नहीं कर तु गम यहां जात–पात का ,
रख कर तुम खुदा पे जरा एतबार देखो ,
होंगी सब मुश्किल तुम्हारी आसान देखो ।

✍**प्रेम बजाज**
जगाधरी यमुनानगर

होंसला रख ले मनुज मन

होंसला रख ले मनुज मन
इस निशा की भोर होगी
दूर होगा तमस सारा
हर किरण इस ओर होगी।

फिर भरेंगे जिंदगी में
नित नवल से रंग प्यारे
चमन महकेंगे खुशी से
खिल उठेंगे ये नजारे।

चह–चहायेंगे ये पक्षी
चाँदनी चितचोर होगी
दूर होगा तमस सारा
हर किरण इस ओर होगी।

खो दिया उसका गिला है
पास है वो है धरोहर
शोक तजकर ढूँढ ले तू
फिर सुखों का वो सरोवर।

जिसके किनारे जिंदगी
खिल रही हर ओर होगी
दूर होगा तमस सारा
हर किरण इस ओर होगी।

बेशक व्यथित मन हो रहा
काल का तांडव निरखकर
जगत पीड़ा से भरा है
जा रहे अपने तड़पकर।

वक्त लौटेगा वही, ग़र
सावधानी और होगी
दूर होगा तमस सारा
हर किरण इस ओर होगी।।

✍ अनामिका लेखिका
उत्तर प्रदेश

बरसात

ये कैसा सावन आया है
नफरत की हो रही है बरसात
धरती हो गई पानी पानी
मानवता हो रही है शर्मसार।

ये कैसा सावन आया है
बारूद की ढ़ेर पर खड़ा है संसार
मार काट की होड़ मची है
इन्सानियत की लुट गई है बाजार।

ये कैसा सावन आया है
भाई भाई में ठन गई है दीवार
धन दौलत की चाहत में
रिश्ते की मर्यादा हुई तार तार।

ये कैसा सावन आया है
बेटियों संग हो रही है अपराध
हर नुक्कड़ पे खड़ा है वहशी
चुप क्यूं देख रही है सरकार।

ये कैसा सावन आया है
वोट के लिये प्यासी है तलवार
त्राहि त्राहि मची हुई है
कहाँ छुप गये हो अय पालनहार।

ये कैसा सावन आया है
धर्म को बना लिया व्यापार
अपने अपने धर्म की झंडा ले
निकल पड़े हैं धर्म के कर्णधार।

ये कैसा सावन आया है
भ्रष्ट्राचारियों की लगी है लंबी कतार
आम जन शोषित हो रोते
कौन करेगा इसकी उपचार।

ये कैसा सावन आया है
राजनेता बना कुर्सी का यार
जनता की दर्द कोई नहीं सुनता
लानत है ऐसी सहचार।

✍उदय किशोर साह
जयपुर जिला बाँका बिहार

मुश्किल घड़ी में हिम्मत न हारना...

मुश्किल घड़ी में दोस्तों! हिम्मत न हारना,
आ रही चुनौतियों को हमें है ललकारना।
हिम्मत हार जाने से हमें पटखनी मिलेगी,
किसी भी हाल में हमें हार न स्वीकारना।।

किसी की मदद हो, हमें पूर्ण प्रयास करना,
थोड़ी सी मदद करके, जीवन में रंग भरना।
आँखों से बह रहे अश्क, यदि बंद हो जाए,
ऐसी कोशिश करने से, कभी पीछे न हटना।।

सुख व दुःख का लगा रहता है आना–जाना,
इंसानियत के पथ पर, सदा ही चलते रहना।
कुत्सित मानसिकता वाले भी, दिख जाएँगे,
चहुँओर है अंधेरा, मानवता को जिंदा रखना।।

धन, दौलत, हीरा व मोती सब यहीं रह जाना,
बस! सद्कर्म यहाँ से, हमें साथ लेकर जाना।
कितने कुबेरपति गए, कोई उन्हें याद न रखता,
मानवीय मूल्यों का सफर, होता खूब सुहाना।।

छाया है सर्वत्र तिमिर, निश्चित है उसे छंट जाना,
निशा के अंधेरे के बाद सूरज का उग है आना।
डूबते का तिनके के सहारे से, जीवन बच जाए,
इस कठिन वक्त में धैर्य रख हमें विजय है
पाना।।

✍लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती (उत्तर प्रदेश)

दुर्घटना में घायल लोग की सहायता

आघात से मरने वालों को जब
नजदीक से देखा
देखते ही उसे मैं रो पड़ा था
किसी तरह अपने आंसू को समेटा,

उसे देख कर मेरे में ऐसी साहस नहीं बची
उसे उठा कर डाक्टर के
पास ले जाऊं,
इतने में वहाँ लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी,
देखते ही देखते डाक्टर के पास
ले जाने की तैयारी हो चली थी,

डॉक्टर उसका चेकअप जबकर के आया
उसने भी उसे मरा हुआ बताया,
लोगों को यह बात सुन आँखे नम
हो रही थी, मेरे आखों से फिर रुलाई
निकल पड़ी थी।

ऐसी घटनावों को न अनदेखा करो
चोट लगने वालों की सहायता करो!

✍दिवाकर तिवारी
साहित्य विभाग के.सं. वि.लखनऊ

आशियाना

कैसा आशियाना है ?, छोड़कर तो जाना है,
फिर भी कितने शिकवे हैं, कैसा ताना–बाना है ?
वक्त ना ठहरता यह, हाथ से फिसलता है,
उम्र के पड़ाव को तो, यूं ही आना जाना है,

रह जाएगी धरी तेरी, ख्वाहिशें हो कितनी भी,
एक भी तमन्ना को, संग नहीं जाना है,
क्यों अकड़ता है मानव, तेरा ना अस्तित्व कोई,
समय का परिंदा है, इसको तो उड़ जाना है,

पंचतत्व का यह देह, आत्मा से पूर्ण हुआ,
पंचतत्व में इसको फिर, से मिल जाना है,
कर्म तेरे फैलेंगे पुष्प की, सुगंध सदृश,

इसलिए सुकर्म करो, पुण्य गर कमाना है,
मृत्यु सत्य शाश्वत है, एक दिन आएगी,
जीवन को कर सार्थक, भक्ति मार्ग पाना है,
कलुषित ना कर जीवन, ईश्वर में रत हो मन,
मार्ग का प्रदर्शक तो, उसको ही बनाना है,
सांसो का बंधन यह, आत्मा से यूं जुड़ा है।
वैसा ही बंधन, भगवान से बनाना है।

समय कहां रुकता है, भागता परिंदा सा,
जीवन को सार्थक , सदमार्गी बनाना है,
''रीत'' कहे काया में, ही बसती माया है,
ईश्वर का ध्यान करके, मुक्ति मार्ग पाना है।

✍ रीता तिवारी ''रीत''
मऊ उ०प्र०

खुद की तलाश जारी है

खुद से मिलने का
प्रयास जारी है
खुद की तलाश
जारी है,
भ्रम भी कितना
अहित करता है
बबूलोके जंगल में
पलाश की खोज जारी है
खुद की तलाश जारी है,

हृदय नहीं करता है
हवाओं में उड़ने का
नहीं मन करता है
नैनो में रंग भरने का
हृदय के साथ
पग बोझ भी भारी है
खुद की तलाश जारी है,

हृदय निरादर हो गया
फटी चादर सा हो गया
इच्छाओं का एकांतवास है
खुद से खुद की तलाश है,
हंसते हुए अंबर पर भी
बस अब बदरी कारी है
खुद की तलाश जारी है,

दूर गगन में
मन एक ध्रुव तारा है
कभी–कभी लगता है
जैसे वह हमारा है
पीत पत्र सा जीवन
नीरस जग सारा है
हारे हुए मन को
लड़खड़ा ने की बीमारी है
खुद की तलाश जारी है

✍ रेखा शाह आरबी
बलिया उत्तर प्रदेश

प्रकृति से छेड़ छाड़

अंधकार में धँसे निरन्तर तज कर सुखद उजाला।
जानबूझ कर पैर कुल्हाड़ी खुद मारी है हमने।
छेड़ छाड़ की खूब प्रकृति से देखे सुन्दर सपने।
पेड़ काट कर धरा प्रकृति को है विकृत कर डाला ।
अंधकार में धँसे निरन्तर तज कर सुखद उजाला ।।

सुख साधन के चक्कर में पड़ कृतिम रूप अपनाया ।
प्रकृति सम्पदा को हमने ही दूषित कर ठुकराया ।
अमृत घट का किया अनादर भाया विष का प्याला ।
अंधकार में धँसे निरन्तर तज कर सुखद उजाला ।।

पेड़ काट सौन्दर्य धरा का बिल्कुल किया सफाया ।
जल की, की बर्बादी हमने जम कर खूब बहाया ।
सूखा और अकाल, पड़ेगा भूख प्यास से पाला ।
अंधकार में धँसे निरन्तर, तज कर सुखद उजाला ।।

साँस–साँस को तड़प रहे हैं ऑक्सीजन को तरसे ।
हरे भरे तरु स्वंय हमीं ने तब तो काटे जड़ से ।
जीवन खतरे में स्थिति को यदि अब नहीं सम्हाला ।
अंधकार में धँसे निरन्तर तज कर सुखद उजाला ।।

✍ **श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'**
भिण्ड,म०प्र०

जीवन खुशी के रंग

अदरख वाली चाय हो, और पकौड़े संग,
ये पल देते हैं सदा, जीवन के खुश रंग।

असफलता देती सदा, एक नया पैगाम,
जीत वही पाते भगत, जो चलते अविराम।

माने दिल अपना जिसे, वो क्यों लागे गैर,
मन के शक को मारिये, तब सब होगा खैर।

समीकरण है प्यार का, प्रेम और विश्वास ,
इससे जो दूरी रखे, वो पाता दुख पास।

गूँज रहीं शहनाइयां, भोज चल रहा रोज .
हर शादी में हो रही, अब्दुल्ला की मौज।

महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल, मध्य प्रदेश

हे!मजदूरो तुम्हें नमन

जो धरती की माटी लेकर
माथे , तिलक लगाते हैं।
जो खेतों से राजपथों तक
श्रम के गीत सुनाते हैं
जिनके भीतर जलती रहती
सूरज जैसे कोई अगन।।'
हे! मजदूरो तुम्हें नमन
हे! श्रमवीरों तुम्हें नमन।।

जिसका श्वेद, गिरे धरा पर
वो चंदन बन जाता है
चट्टानों को काटकर जो
गीत विजय के गाता है
संघर्षो में भी तप कर जो
भीतर जिंदा रखे लगन ।
हे!मजदूरो, तुम्हें नमन
हे!श्रमवीरो, तुम्हे नमन ।।

जो माटी को सींच रहे हैं
अपने खून पसीने से
खूब संवरती है ये धरती
श्रम के इसी नगीने से ।
जिनके भीतर ही तपती है
सूरज जैसे कोई अगन ।।
हे! मजदूरो तुम्हे हो नमन
हे! श्रमवीरो तुम्हें नमन ।।

जिनका जीवन भी अर्पित है
राष्ट्र के निर्माणो में
आंखों में विश्वास बसा
और मेहनत जिनके प्राणों में
ये माटी के सच्चे सैनिक
जो रखते खुशहाल वतन ।।
हे! मजदूरों तुम्हें नमन
हे! श्रमवीरों, तुम्हें नमन।।

जो रहते हैं बुनियादों मे
चकाचौंध से कोसो दूर
अपना केवल फर्ज निभाते
श्रम मे जीने वाले शूर
देश के खातिर ढला हुआ
इनका है फौलाद बदन।।
हे! मजदूरो तुम्हें नमन
हे! श्रमवीरों तुम्हें नमन।।

✍सतीश उपाध्याय
मनेंद्रगढ़ कोरिया छत्तीसगढ़

गज़ल

परेशानी कहाँ अब हो रही सरकार क्या जाने,
कहाँ पर दफ्न है सच्चाई अखबार क्या जाने।

मुझे ले कर गए थे बेचने बाजार में उनके
मेरी कीमत भला बे–जान वो बाजार क्या जाने।

बड़े इतरा रहे हैं ये नए आशिक अब इसमें क्यों
नए हैं इश्क में,ये इश्क की अब मार क्या जाने।

उसे तो बस अना–ए–हुस्न से तो इश्क बेहद पर,
इशारे जो न समझी वो मेरा इज्हार क्या जाने।

मरम्मत मांगता है दार इक इक आब बूंदों पर
मुबलिसी जेब है नादान मेरा दार क्या जाने।

इस इक पल जिंदगी में तो बहुत दीवार देखा हैं,
मेरा वो दर्द मेरा ये नया किरदार क्या जाने।

भरा मेरा नहीं है दिल मेरे इस यार से दीपक,
बदलता रोज है जो दिल भला वो प्यार क्या जाने।

✍दीपक महापात्रे
रायगढ़ छत्तीसगढ़

हाय रे कोरोना!

आज मन बड़ा व्याकुल है,
कल के चक्कर मैं आज आकुल हैं।
हाय रे कोरोना! हाय रे कोरोना!
तेरे चक्कर में जगत पूरा शोकाकुल है।।

पूरे साल किए हम मेहनत,
ना बढ़ी तनिक भी तनख्वाह हमारी।
महंगाई इतनी बढ़ी हैं कि,
इतने पैसे में होत ना निर्वाह हमारी।।
हाय रे कोरोना! हाय रे कोरोना!

बुहान शहर से चली जो हवा,
उस हवा से ना जाने,
बेरोजगार हुए कितने युवा।।
तारीख पक्की थी अपनी,
प्रिय संग विवाह–बंधन की।
कैसे पूरी हो आस अपनी,
जब आजादी नहीं साधन की।।
हाय रे कोरोना! हाय रे कोरोना!,

शिवालय, विद्यालय सब बन्द करवाया।
क्या अमेरिका, क्या इटली, क्या रूस,
सब जगह लॉकडाउन तूने करवाया।।
बड़ा डर मुझको लगता,
दिल ये जोर जोर धड़कता।
जब सुनता कोई आया परदेशी,
डर के मारे उनसे दूर से मिलता।।
हाय रे कोरोना! हाय रे कोरोना!,

दोस्ती रिश्तेदारी सब भूलवाएं,
क्या होली, क्या गणेश चतुर्दशी,
सब हमसे घर में ही मनवाएं।।
बाहर काल खड़ा मुंह खोले,
घर में ही रहना तुम प्यारें ।
डगर कठिन है, रख भरोसा,
प्रभु दूर करेंगे कष्ट हमारे।।
हाय रे कोरोना! हाय रे कोरोना!,

तुम हम सब से दूर ही रहना।
छोड़ मेरा देश तुम अब जाओ,
हाथ जोड़ करते हम ये अर्चना।।

✍अंकुर सिंह
जौनपुर, उत्तर प्रदेश

मंदिर मस्जिद चर्च गुरुद्वारे नहीं अस्पताल बनायें

मंदिर मस्जिद हो या कि हो चर्च गुरुद्वारा,
ईश्वर अल्ला ये गॉड वाहे–गुरु को पुकारा।
ये तब ही संभव है जब जीवन रहे हमारा,
अभी तो ये कोरोना ने लाखों को है मारा।
दवा ऑसीजन वेंटीलेटर बेड की है मार,
चलें बनाया जाये कोविड अस्पताल यार।

ऑक्सीजन वेंटीलेटर बेड मिले करें भर्ती,
दवा डॉक्टर सब मिले उठे ना कोई अर्थी।
इससे बड़ा पुण्य ना कोई ना कोई है धाम,
सक्षम हैं वे शुरू करें अस्पताल का काम।
नर सेवा ही नारायण सेवा है कर लें अभी,
जग में प्रलय मचा है हाहाकार रुके कभी।
मंदिर मस्जिद चर्च गुरुद्वारा से बड़ा जरुरी,
गाँव शहर में और अस्पताल बने ये जरुरी।

कूल बहुत हैं बने न बने अस्पताल जरुरी
जीवन तभी बचेगा ये अस्पताल है जरुरी।
धन कितना भी कमा ले जमा कर ले कोई,
बीमारी में ये दवा इलाज ही होतें हैं जरुरी।
बेईमानी काला बाजारी छल कपट ये लूट,
काम नहीं आता है जब प्राण जातें हैं छूट।
किसी की मजबूरी से कोई फायदा उठाया,
धन की लालच में जिसने ये अधर्म कमाया।
इस धन की कोई न वैल्यू ये लांछित बेकार,
इस आपदा में धर्म करो वर्ना जीवन बेकार।

✍ डा.विनय कुमार श्रीवास्तव
प्रतापगढ़ सिटी,उ.प्र

जुलाई–सितम्बर 2021

अंक : 5

शालिनी

पेज डिजाईन, सम्पादक व प्रकाशक– कन्हैया लाल